



आनंदराज की कलम

धर्म की प्राथमिकता के 11 कदम ।

धर्म की प्राथमिकता एक विचारधारात्मक विषय है, जिसे आध्यात्मिक, सामाजिक और व्यक्तिगत दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। यहां कुछ ऐसे कदम दिए गए हैं जो किसी व्यक्ति को धर्म (अर्थात् सत्य, कर्तव्य और नैतिकता) को अपने जीवन में प्राथमिकता देने में सहायता कर सकते हैं:

1. आत्मचिंतन और जागरूकता - यह समझना कि धर्म केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि सत्य, दया, और कर्तव्य का पालन है।
2. सत्यनिष्ठ जीवन जीना - सत्य बोलना और सत्य के मार्ग पर चलना धर्म की नींव है।
3. कर्तव्यपालन - अपने परिवार, समाज, और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाना धर्म का हिस्सा है।
4. नैतिकता का पालन - सदाचरण, ईमानदारी, और करुणा को अपनाना।
5. ध्यान और साधना - मन को संयमित और शांत रखने के लिए ध्यान और प्रार्थना करना।
6. शास्त्रों का अध्ययन - धर्मग्रंथों और जीवन मूल्य सिखाने वाले ग्रंथों का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करना।
7. सत्संग करना - संतों, ज्ञानीजनों और सकारात्मक लोगों के संग रहना।
8. सेवा भावना - दूसरों की निष्वार्थ सेवा करना धर्म को प्राथमिकता देने का प्रमुख रूप है।
9. वासनाओं पर नियंत्रण - इन्द्रिय संयम और इच्छाओं का नियंत्रण।
10. प्रकृति और सभी प्राणियों के प्रति करुणा - पर्यावरण और सभी जीवों के प्रति सहानुभूति रखना।
11. आत्मा के स्वरूप की पहचान - यह समझना कि हम शरीर नहीं, आत्मा हैं; और आत्मा का परमात्मा से संबंध बनाना।

~ मुग्नि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

धर्म वही है जो दूसरों के ,
कष्ट में सहभागी बने...
और अपने आचरण से ,
समाज को प्रकाश दे ।

आचार्य श्री रविदेव सूर्यी

गार्मिक प्रश्नगम्च - 179

रन्नत्रयी किसको कहते हैं ???

- | | |
|-------------------------|-------------------|
| (1) देव गुरु धर्म | प्रश्नगम्च 178 |
| (2) मन वचन काया | जवाब |
| (3) ज्ञान दर्शन चारित्र | (2) देव गुरु धर्म |
| (4) क्रोध मान माया | |

विजेता : श्री श्रद्धा वालाणी - अमदावाद

जवाब 9428913847 पर
whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम
अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 रु इनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंकु लाभार्थी
वासुपूर्व्य परिवार
नायगांव

www.arhamsite.com



आनंदराज की कलम

विनय का चमत्कार ।

विनय (विनम्रता) एक महान् गुण है, जो व्यक्ति के चरित्र को ऊँचाई देता है। विनय की महानता के 10 लक्षण शास्त्र में बताये गए हैं ।

1. आत्मज्ञान - विनम्र व्यक्ति स्वयं की सीमाओं और योग्यताओं को पहचानता है।
2. सहनशीलता - वह आलोचना या कठिन परिस्थितियों को शातिपूर्वक सहन करता है।
3. सम्मानभाव - दूसरों के विचारों, अनुभवों और अस्तित्व का आदर करता है।
4. अहंकारहीनता - अपनी उपलब्धियों का घमंड नहीं करता, बल्कि दूसरों को श्रेय देता है।
5. सहयोगशीलता - सबके साथ मिलकर काम करने में विश्वास रखता है।
6. शब्दों में मधुरता - बातचीत में नम्रता और सौम्यता होती है।
7. क्षमा का भाव - दूसरों की गलतियों को क्षमा करने में तत्पर रहता है।
8. सीखने की इच्छा - हर व्यक्ति और अनुभव से कुछ सीखने को तैयार रहता है।
9. सेवा भावना - दूसरों की मदद करने में प्रसन्नता महसूस करता है।
10. संतुलित व्यवहार - सफलता में उन्मादी नहीं होता और असफलता में टूटता नहीं है।

झुके जो सर तो बढ़ता है क़द,
अहंकार से तो दिल होते हैं सर्द।

विनम्रता है वो खुशबू की तरह,

जो खुद को छुपा कर महकती है हर ज़रद।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

विनम्रता वह शक्ति है ।

जो बिना शोर किए ,
दिलों को जीत लेती है।

आचार्य श्री रविदेव सूर्यी

मार्गिक प्रश्नग्रन्थ - 180

इसमें से शाश्वत क्या है ???

- | | |
|--------------|---------------------|
| (1) शत्रुंजय | प्रश्नग्रन्थ 179 |
| (2) गिरनार | जवाब (3) |
| (3) आबु | ज्ञान दर्शन चारित्र |
| (4) समेतशिखर | |

विजेता : श्री जे. डी. शाह - वापी

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 रु इनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी
वासुपूज्य परिवार
नायगांव

www.arhamsite.com



आनंदराज की कलम

गुड़ का पानी सेहत बनाये अच्छी ।

गुड़ का पानी पीने से सेहत को कई फायदे होते हैं।

1. पाचन में मदद करता है :

गुड़ का पानी पाचन किया को दुरुस्त करता है और कब्ज की समस्या को दूर करता है।

2. डिटॉक्स करता है शरीर को :

यह शरीर से विषेले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करता है।

3. खून साफ करता है :

गुड़ का पानी खून को शुद्ध करने में सहायक होता है जिससे त्वचा भी निखरती है।

4. एनीमिया में लाभकारी :

गुड़ में आयरन होता है, जिससे खून की कमी (एनीमिया) में लाभ मिलता है।

5. इम्यूनिटी बढ़ाता है :

गुड़ का पानी शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है।

6. थकान और कमजोरी दूर करता है :

यह ऊर्जा का अच्छा स्रोत है, जिससे शरीर में तुरंत ताकत मिलती है।

7. सर्दी-खांसी में राहत :

यह गले को राहत देता है और बलगम को साफ करता है।

8. त्वचा को चमकदार बनाता है :

खून साफ होने से त्वचा स्वस्थ और चमकदार बनती है।

9. वजन घटाने में मददगार :

गुड़ का पानी मेटाबोलिज्म को तेज करता है, जिससे वजन घटाने में मदद मिलती है।

10. हड्डियों को मजबूत करता है :

इसमें कैल्शियम, फॉस्फोरस और आयरन जैसे मिनरल होते हैं जो हड्डियों के लिए फायदेमंद हैं।

11. पीरियड्स के दर्द में राहत :

महिलाओं के लिए यह मासिक धर्म के दौरान दर्द और एंठन से राहत देता है।

12. ब्लड प्रेशर को संतुलित करता है :

गुड़ में पोटैशियम होता है जो रक्तचाप को नियन्त्रित करने में सहायक है।

गुड़ का पानी सुबह खाली पेट पीना सबसे ज्यादा फायदेमंद माना जाता है।

~ मुग्नि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

जैसे गुड़ मीठा होकर भी

सेहतमंद होता है ।

वैसे ही हमारे बोल मीठे हों तो
रिश्ते भी हमेशा स्वस्थ और

मजबूत रहते हैं ।

आचार्य श्री रविदेव सूर्यी

गार्मिंक प्रश्नगम्च - 181

अरिहंत परमात्मा के कितने गुण हैं ?

(1) 8 (2) 51 (3) 18 (4) 12

प्रश्नगम्च 180 जवाब (1) शत्रुंजय

विजेता : श्री महेन्द्रभाई वोरा - बोरीवली

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 रु इनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी

श्री वासुपूज्य स्वामी

गृह बिनालय

कृष्णनगर - अगदाबाद

सालगिरह निमित्ते



आनंदराज की कलम

सुख शैय्या आनंदकारी ।

भारतीय वास्तुशास्त्र और आयुर्वेद के अनुसार, सोने की दिशा का हमारे स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति और ऊर्जा स्तर पर प्रभाव पड़ता है।

1. उत्तर (North) की ओर सिर रखकर सोना

"वर्जित माना जाता है"

कहा जाता है कि इससे मानसिक अशांति, सिरदर्द और नींद की गुणवत्ता पर असर पड़ता है।

वैज्ञानिक रूप से, यह चुंबकीय प्रभाव के कारण रक्त प्रवाह को प्रभावित कर सकता है।

2. दक्षिण (South) की ओर सिर रखकर सोना

"सबसे उत्तम माना जाता है"

यह ऊर्जा संतुलन बनाए रखता है, नींद अच्छी आती है और स्वास्थ्य लाभ होता है।

3. पूर्व (East) की ओर सिर रखकर सोना

विद्या, एकाग्रता और आत्मविकास के लिए अच्छा

विद्यार्थियों और मानसिक श्रम करने वालों के लिए उपयुक्त माना गया है।

4. पश्चिम (West) की ओर सिर रखकर सोना

"मिश्रित परिणाम"

कुछ मान्यताओं में यह ठीक माना गया है, लेकिन यह सबसे उत्तम नहीं माना जाता।

सोने के समय ध्यान में रखनी चाहिए यह बातें ताकि नींद गहरी और स्वास्थ्यवर्धक हो....

1. सही दिशा में सोएं

दक्षिण या पूर्व की ओर सिर रखकर सोना सबसे अच्छा होता है, जैसा ऊपर बताया गया।

2. सोने से कम से कम 1-2 घण्टे पहले खाना खा लें

भारी भोजन से तुरंत सोने पर पाचन खराब होता है और नींद बाधित होती है।

3. सोने से पहले मोबाइल/स्क्रीन का प्रयोग न करें

मोबाइल या लैपटॉप की नीली रोशनी नींद को नियन्त्रित करने वाले मेलाटोनिन हार्मोन को प्रभावित करती है।

4. सोने का समय नियमित रखें

हर दिन एक ही समय पर सोना और उठना शरीर की जैविक घड़ी को संतुलित रखता है।

5. शांत और अंधेरे वातावरण में सोएं

नींद के लिए अंधेरा, शांत और ठंडा वातावरण सबसे उपयुक्त होता है। चाहें तो हल्का म्यूजिक या ध्यान अभ्यास कर सकते हैं।

~ मुग्नि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

शैय्या वह स्थान है

जहाँ शरीर विश्राम करता है,

परंतु यदि मन अशांत हो तो

सबसे मुलायम बिस्तर भी

काँटों जैसा लगता है।

आचार्य श्री रविदेव सूर्दिली

गार्मिंक प्रश्नगम्च - 182

कौनसे भगवान का
लांछन सिंह है ???

(1) आदिनाथ

प्रश्नगम्च 181

(2) शांतिनाथ

जवाब (4)

(3) पार्श्वनाथ

12

(4) महावीर स्वामी

विजेता : श्री जयश्रीबेन बारसी

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अहंम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 रु इनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंकु लाभार्थी

श्री वासुपूज्य स्वामी

गृह बिनालय

कृष्णनगर - अगदाबाद

सालगिरह निमित्ते



आनंदराज की कलम

ज्ञान की लगन ।

बहुत समय पहले की बात है। एक छोटे से गाँव में अर्जुन नाम का एक लड़का रहता था। वह बेहद जिज्ञासु था और हमेशा कुछ नया सीखने को उत्सुक रहता था। उसके माता-पिता किसान थे, और गाँव में शिक्षा की बहुत सीमित व्यवस्था थी। लेकिन अर्जुन के मन में ज्ञान के प्रति ऐसी आग थी कि वह हर सुबह सूरज उगने से पहले उठता और अपने गुरुजी के घर जा पहुँचता।

गुरुजी एक वृद्ध विद्वान थे, जो बिना किसी शुल्क के बच्चों को पढ़ाते थे। उन्होंने अर्जुन की लगन को देखकर उसे विशेष ध्यान देना शुरू किया। अर्जुन न केवल पढ़ाई में अच्छा था, बल्कि जो कुछ भी सीखता, उसे अपने जीवन में अपनाने की कोशिश करता।

एक दिन गाँव में एक बड़ा जलसाभर आयोजन हुआ, जिसमें एक प्रसिद्ध विद्वान पठित आए। उन्होंने गाँव के बच्चों से प्रश्न पूछे, लेकिन कोई उत्तर नहीं दे पाया। जब उन्होंने अर्जुन से पूछा, तो उसने न केवल उत्तर दिया, बल्कि उसका कारण भी बताया। सभी लोग हैरान रह गए।

पठितजी ने अर्जुन से पूछा, "बेटा, तुम इतना सब कैसे जानते हो?" अर्जुन ने नम्रता से उत्तर दिया, "मुझे ज्ञान से प्रेम है। मैं मानता हूँ कि ज्ञान ही वह दीपक है जो अज्ञानता के अंधकार को मिटा सकता है।"

पठितजी बहुत प्रभावित हुए और अर्जुन को शहर में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति दिलवाई। वर्षों बाद अर्जुन एक महान शिक्षक और वैज्ञानिक बना। उसने गाँव लौटकर वहाँ एक स्कूल की स्थापना की, ताकि कोई और बच्चा केवल साधनों की कमी से शिक्षा से वचित न रह जाए।

जब व्यक्ति के मन में ज्ञान पाने की सच्ची लगन होती है, तो रास्ते खुद-ब-खुद बन जाते हैं।

1. ज्ञान के प्रति लगन सफलता की कुंजी है:

अर्जुन का ज्ञान के लिए समर्पण ही उसकी प्रगति और पहचान का कारण बना।

2. संसाधनों की कमी कभी बाधा नहीं बनती:

सीमित संसाधनों और कठिनाइयों के बावजूद अर्जुन ने शिक्षा प्राप्त की, यह दिखाता है कि इच्छाशक्ति सबसे बड़ी शक्ति है।

3. ज्ञान का उद्देश्य केवल स्वयं तक सीमित नहीं होना चाहिए:

अर्जुन ने आगे चलकर अपने गाँव के लिए स्कूल खोला, जिससे यह सिखने को मिलता है कि सच्चा ज्ञान वह है जो दूसरों के जीवन को भी रोशन करे।

~ मुग्नि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

सीखने की कोई ,

उम्र नहीं होती...

बस जिज्ञासा ,

होनी चाहिए ।

आचार्य श्री रविदेव सूर्यी

गार्मिंक प्रश्नगम्च - 183

कृष्ण महाराजा मृत्यु के बाद

कौनसी नर्क में गये ???

(1) पहली

प्रश्नमंच 182

(2) सातवीं

जवाब (4)

(3) तीसरी

महावीर स्वामी

(4) चौथी

विजेता : श्री मनसुखलाल हिरण

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 रु इनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी
श्री ललित लैन

मुंबई

www.arhamsite.com



आनंदराज की कलम

उज्जवल जीवन के 9 आदर्श ।

उज्जवल जीवन जीने की चाह हर व्यक्ति की होती है, परंतु इसके लिए कुछ आदर्शों का पालन अनिवार्य है। ये आदर्श हमारे चरित्र को मजबूत बनाते हैं और जीवन को एक सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं। आज के समय में जहाँ भौतिकता हावी है, वहीं ये मूल्य हमें संतुलन और शांति प्रदान करते हैं। इन आदर्शों को अपनाकर हम न केवल अपने जीवन को संवार सकते हैं, बल्कि समाज के लिए भी प्रेरणा बन सकते हैं। आइए, ऐसे 9 आदर्शों को जानें जो उज्जवल जीवन की नींव रखते हैं।

आदर्श - 1.

सत्य - जीवन में सदैव सच्चाई को अपनाएं, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

आदर्श - 2.

अहिंसा - विचार, वाणी और कर्म से किसी को कष्ट न पहुँचाना।

आदर्श - 3.

कर्तव्यनिष्ठा - अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निभाना।

आदर्श - 4.

संयम - इच्छाओं, भावनाओं और वाणी पर नियंत्रण रखना।

आदर्श - 5.

सेवा भाव - निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करना।

आदर्श - 6.

सदाचार - अच्छे आचरण, व्यवहार और नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाना।

आदर्श - 7.

परिश्रम - सफलता का कोई विकल्प नहीं, मेहनत ही सफलता की कुंजी है।

आदर्श - 8.

ध्यान और आत्मचिंतन - नियमित रूप से स्वयं के भीतर झाँकना और आत्मविकास के लिए समय निकालना।

आदर्श - 9.

संतोष - उपलब्ध साधनों में प्रसन्न रहना और निरंतर आत्म-सुधार करना।
~ मुग्नि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

जीवन का असली उजाला ,
बाहर की रोशनी से नहीं,
भीतर के ,
सदुणों से आता है ।

आचार्य श्री रविदेव सूर्यी

गार्मिंक प्रश्नगम्च - 184

परमात्मा की आरती में कम से कम कितनी दिवेट होती है ???

(1) 7

प्रश्नगम्च 183

(2) 5

जवाब (3)

(3) 10

तीसरी

(4) 8

विजेता : श्री हिरेनभाई - वापी
जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 रु ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी
जान प्रचार हेतु
अंक लाभार्थी बनें ।



आनंदराज की कलम

नम्रतापूर्ण व्यवहार ।

वक्त की क़द्र करना सीखो दोस्तों,
ये वही उस्ताद है जो बिना पढ़ाए सबक सिखा देता है।

समय हमारे जीवन का सबसे कीमती धन है। एक बार जो समय बीत जाता है, वह कभी लौटकर नहीं आता। इसीलिए हमें समय की कीमत को समझना चाहिए और हर पल का सही उपयोग करना चाहिए।

जो लोग समय का सही उपयोग करते हैं, वे जीवन में हमेशा सफलता प्राप्त करते हैं। विद्यार्थी यदि समय पर पढ़ाई करें, तो उन्हें परीक्षा में अच्छे अंक मिलते हैं। किसान समय पर फसल बोए तो अच्छी पैदावार होती है। इसी तरह हर काम को सही समय पर करना जरूरी होता है।

समय की बर्बादी जीवन की बर्बादी है। आलसी और समय नष्ट करने वाले लोग अक्सर पछताते हैं। वहीं, जो लोग समय के पाबंद होते हैं, वे अनुशासित और जिम्मेदार बनते हैं।

हमें चाहिए कि हम हर दिन का एक सही उपयोग करें, योजना बनाएं और समय के अनुसार अपने कार्य पूरे करें। मोबाइल, टीवी या खेल में समय की अधिक बर्बादी नहीं करनी चाहिए।

समय का सम्मान करने से जीवन में सफलता, सुख और सम्मान मिलते हैं। इसलिए हमें हर क्षण को कीमती मानते हुए उसका सदुपयोग करना चाहिए।

नम्र व्यक्ति सीखने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। वे दूसरों की गलतियों को क्षमा करना जानते हैं। समाज में ऐसे लोगों को आदर और मान्यता मिलती है। नम्रता आत्म-संयम और आंतरिक शक्ति का प्रतीक है। यह एक ऐसा गुण है, जो इंसान को महान बनाता है।

~ मुग्नि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

जो समय की कीमत
समझता है....

वही जीवन में सफलता की
ऊँचाइयों को छूता है।

आचार्य श्री रविदेव सूर्यी

गार्मिंक प्रश्नगम्च - 185

परमात्मा की आरती में ज्यादा से ज्यादा
कितनी दिवेट होती है ???

- (1) 51
- (2) 68
- (3) 108
- (4) 1008

प्रश्नगम्च 184

जवाब (2)

5

विजेता : श्री नमो जैनम्
जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 रु ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंक लाभार्थी
ज्ञान प्रचार हेतु
अंक लाभार्थी बनें ।



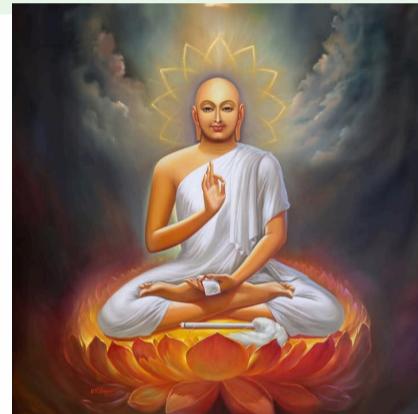
आनंदराज की कलम

भद्र परिणामी ।



इंसान वही जो इंसानियत को समझे,
सच की राह चले, झूठ से बचे।
दिल में हो करुणा, वचन में हो प्यार,
करे जो भलाई, बने सबका उद्धार।
धैर्य हो जिसकी ढाल, कर्तव्य उसका धर्म,
भद्र परिणामी हो वो, जीवन बने मर्म।

1. सत्यनिष्ठा (ईमानदारी)



भद्र परिणामी व्यक्ति सदैव सत्य का पालन करता है। वह किसी भी परिस्थिति में झूठ या छल-कपट का सहारा नहीं लेता। उसकी वाणी और कार्यों में पारदर्शिता होती है, जिससे उस पर लोगों का विश्वास बना रहता है।

2. करुणा और सहानुभूति

ऐसे व्यक्ति दूसरों के दुःख-दर्द को महसूस कर सकते हैं। उनमें दूसरों की सहायता करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। वे बिना स्वार्थ के दया और प्रेम का व्यवहार करते हैं, चाहे सामने वाला कोई भी हो।

3. धैर्य और सहनशीलता

भद्र परिणामी व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी संयम बनाए रखता है। वह भावनाओं में बहकर कोई गलत निर्णय नहीं लेता, बल्कि शातिपूर्वक समाधान खोजता है। उसमें आलोचना और असहमति को सहने की क्षमता होती है।

4. कर्तव्यनिष्ठा

वह अपने कर्तव्यों को ईमानदारी और पूरी निष्ठा से निभाता है। चाहे परिवार हो, समाज हो या कार्यस्थल—हर जगह वह अपने उत्तरदायित्वों को गंभीरता से लेता है और टालमटोल नहीं करता।

5. नैतिक आचरण

भद्र परिणामी व्यक्ति सदैव नैतिक मूल्यों का पालन करता है, जैसे—न्याय, संयम, निष्ठा और सदाचार। वह गलत साधनों या अवैध उपायों से सफलता पाने में विश्वास नहीं रखता।

6. संतुलित और शांत स्वभाव

ऐसे व्यक्ति का स्वभाव स्थिर और विवेकपूर्ण होता है। वह आवेश में आकर दूसरों को आहत नहीं करता, बल्कि धैर्यपूर्वक बातों को समझाने और सुलझाने का प्रयास करता है।

7. जनहित में कार्य करना

भद्र परिणामी व्यक्ति केवल अपनी भलाई नहीं सोचता, बल्कि समाज की भलाई के लिए भी कार्य करता है। वह सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सक्रिय होकर सकारात्मक योगदान देता है।

~ मुग्नि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

सच्चाई, करुणा और

कर्तव्यनिष्ठा

वह दीपक हैं...

जो भद्र परिणामी व्यक्ति के
जीवन को प्रकाशित करते हैं।
आचार्य श्री रविदेव सूरीश्वरजी

गार्मिंक प्रश्नगम्च - 186

एक दिन में परमात्मा कितना

वर्षिदान देते हैं ???

(1) एक करोड आठ लाख सोनैया प्रश्नगम्च 185

(2) एक करोड साठ लाख सोनैया जवाब (3)

(3) एक लाख आठ हजार सोनैया 108

(4) एक करोड एशी लाख सोनैया

विजेता : श्री मालव शाह - कृष्णनगर

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 रु इनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंकु लाभार्थी

चतुर्विंश श्री संध

शाशन स्थापना दिवस

॥ नमो तित्थस्य ॥

www.arhamsite.com



आनंदराज की कलम

" लौंग : छोटा मसाला , बड़े फायदे "

लौंग एक सुगंधित मसाला है जो पाकशास्त्र के साथ-साथ आयुर्वेदिक औषधियों में भी प्रयोग होता है। इसमें यूजेनॉल नामक तत्व पाया जाता है, जो एंटीसेप्टिक और दर्द निवारक गुणों से भरपूर होता है। लौंग पाचन को सुधारता है, दांत दर्द में राहत देता है और सर्दी-जुकाम में फायदेमंद होता है। यह प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है और मुँह की दुर्गंधि दूर करता है। आयुर्वेद में इसे गर्म तासीर वाला माना जाता है।

1. दांत दर्द में राहत - लौंग का तेल दांत दर्द और मसूड़ों की सूजन में बहुत फायदेमंद होता है, इसमें एंटीसेप्टिक गुण होते हैं।
2. पाचन में सहायक - लौंग पेट की गैस, अपच और पेट दर्द को कम करता है।
3. सर्दी-जुकाम में राहत - लौंग गले की खराश, खांसी और बलगम से राहत दिलाने में मदद करता है।
4. प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है - इसमें एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं।
5. एंटीबैक्टीरियल गुण - लौंग में बैक्टीरिया को खत्म करने की क्षमता होती है, जिससे यह संक्रमण से बचाता है।
6. श्वसन तंत्र के लिए उपयोगी - लौंग का सेवन अस्थमा और ब्रोंकाइटिस जैसी समस्याओं में राहत देता है।
7. ब्लड शुगर नियंत्रण में सहायक - कुछ शोधों के अनुसार लौंग का सेवन रक्त शर्करा स्तर को संतुलित करने में मदद करता है।
8. एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण - यह सूजन और दर्द को कम करने में सहायक होता है।
9. कैंसर रोधी गुण - कुछ प्रयोगशाला अध्ययनों में लौंग में कैंसर-रोधी गुण पाए गए हैं (विशेष रूप से त्वचा और फेफड़ों के कैंसर में)।
10. मुँह की दुर्गंधि दूर करता है - लौंग चबाने से मुँह की दुर्गंधि दूर होती है और ताजगी मिलती है। ~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

प्रकृति की हर छोटी चीज़ में
बड़ा लाभ छिपा होता है,
जैसे एक छोटी लौंग में
अनेक रोगों का इलाज।

आचार्य श्री रविदेव सूर्यी

गार्मिंक प्रश्नगम्च - 187

जिस जिनालय में अरिहंत प्रभु की प्रतिमा हो (परिकर वाली) उस जिनालय की ध्वजा कैसी हो ???

- | | |
|----------------------------|----------------|
| (1) दो और सफेद बीच में लाल | प्रश्नगम्च 186 |
| (2) दो और लाल बीच में सफेद | जवाब (1) |
| (3) संपूर्ण लाल | 1 करोड़ |
| (4) संपूर्ण सफेद | आठ लाख |

विजेता : श्री इशिता हिरन - धोलवाड

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 रु इनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंकु लाभार्थी
विश्व शांति के लिए
12 नवकार मंत्र का
अवश्य जाप करें।
www.arhamsite.com



आनंदराज की कलम

" झाड़ूः स्वच्छता से समृद्धि तक का वास्तु रहस्य "

वास्तु शास्त्र में झाड़ू को लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है, लेकिन इसे सही स्थान और समय पर रखना बहुत जरूरी है, वरना यह नकारात्मक प्रभाव भी डाल सकता है।

1. झाड़ू को छुपाकर रखें : झाड़ू को हमेशा ऐसी जगह रखें जहाँ वह दिखाई न दे। खुले में रखने से धन की हानि मानी जाती है।
2. झाड़ू उत्तर-पूर्व दिशा में न रखें : इस दिशा को ईशान कोण कहा जाता है, जो देवताओं और सकारात्मक ऊर्जा का स्थान है। यहाँ झाड़ू रखना वर्जित है।
3. झाड़ू को खड़ा करके न रखें : झाड़ू को लेटा कर ही रखें। खड़ी झाड़ू को अशुभ माना जाता है।
4. झाड़ू से किसी को न छुएँ : किसी व्यक्ति को गलती से भी झाड़ू से छूने को अशुभ माना जाता है।
5. रात में झाड़ू न लगाएँ : सूर्यास्त के बाद झाड़ू लगाने से लक्ष्मी का अपमान होता है और धन हानि हो सकती है।
6. पुरानी झाड़ू को समय पर बदलें : टूटी-फूटी झाड़ू को घर में रखना नकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करता है।
7. झाड़ू को रोज घर के मुख्य दरवाजे के पास से नहीं लगाना चाहिए : इससे सकारात्मक ऊर्जा घर में आने से रुक सकती है।
8. झाड़ू को पूजा स्थान या रसोई में न रखें : यह स्थान पवित्र माने जाते हैं। झाड़ू रखने से वहाँ की शुद्धता भंग होती है और अशुभ फल मिलते हैं।
9. झाड़ू को रोजाना एक ही समय पर प्रयोग करें : नियमितता से सफाई करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है।
10. झाड़ू को कभी भी रविवार या अमावस्या को न खरीदें : इन दिनों को अशुभ माना गया है, इन पर झाड़ू खरीदने से दुर्भाग्य बढ़ सकता है।
11. झाड़ू को बच्चों के खेलने का साधन न बनाने दें : इससे देवी लक्ष्मी का अपमान होता है और दुर्भाग्य आता है।
12. झाड़ू को द्वार के बिल्कुल पास न रखें : मुख्य द्वार के पास झाड़ू रखने से सकारात्मक ऊर्जा घर में प्रवेश नहीं कर पाती।

~ मुनि आगमप्रिय विजय {आनंदराज}

धर्मलाभ

झाड़ू केवल घर की गंदगी नहीं हटाती.. यह हमें सिखाती है कि जीवन से भी नकारात्मकता को रोज़ हटाना जरूरी है, तभी सुख और समृद्धि बनी रहती है।
आचार्य श्री रविदेव सूर्यी

गार्मिंक प्रश्नगम्च - 188

दो पांव के बीच हाथ रखना पड़े वैसा कौनसा सूत्र ???

- | | |
|----------------|----------------|
| (1) इरियावहिया | प्रश्नगम्च 187 |
| (2) संसार दावा | जवाब (2) |
| (3) वांदणा | दो और लाल |
| (4) वंदितुं | बीच में सफेद |

विजेता : श्री भुपतभाई - ठाकुरद्वारा

जवाब 9428913847 पर

whatsapp करें...

झो द्वारा विजेता को नाम

अर्हम् दैनिक में आयेगा

एवं 13 रु ईनाम प्राप्त होगा।

contact : 8849680131

arhamsite9@gmail.com

आज के अंकु लाभार्थी
विश्व शांति के लिए
12 नवकार मंत्र का
अवश्य जाप करें।
www.arhamsite.com